International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 17-04-2022, Accepted: 02-05-2022, Published: 18-05-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 32-34

हिंदी महाकाव्यों में नायिका की परिकल्पना

सुनिता राठोड
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, वसंतराव नाईक महाविद्यालय, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
महाकाव्य भारतीय हो या पाश्चात्य उसमें पात्रों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। पात्र ही कथा को गति प्रदान करते हैं। इन पात्रों में नायक और नायिका का प्रमुख स्थान स्वाभाविक है। प्राचीन काल की नायिका के लिए आवश्यक था कि वह सद्वंश और उच्च क्षत्रिय कुल की हो परंतु आधुनिक नायिका में मन,वाणी और कर्म केवल यहीं तीन गुण आवश्यक माने गए हैं फिर चाहे वह किसी भी कुल अथवा वंश की क्यों न हो। प्रस्तुत शोधालेख में हिंदी महाकाव्यों में नायिका की परिकल्पना को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः परिकल्पना संस्कारबद्ध, सच्चरित्र, सहिष्णुता

प्रस्तावना
भारतीय आचार्यों ने नायिका में कुछ विशेष गुण आवश्यक बताये है। जैसे–कुल, सौंदर्य, शील, भूषण, वैभव यौवन, गुण, प्रेम। इन गुणों से युक्त नायिका अष्टांगवती कहलाती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा तथा ललित कलाओं का भी नायिकाओं के व्यक्तिगत गुणों में प्रमुख स्थान है।
शिक्षा के अंतर्गत विशेष रूप से पतिव्रत धर्म की ही शिक्षा दी गई। ललित कलाओं के अंतर्गत संगीत, वादन, चित्रकला आदि की गणना की गई। नायिकाओं के व्यक्तिगत गुणो मे क्रमशः सौंदर्य,श्रृगांर, शील, कुल, ललित कला, शिक्षा और वर्ग को स्थान दिया गया। आधुनिक युग में केवल रूपमात्र ही आकर्षण का काम नहीं करता। अब समाज, देश, जाति का कल्याण करने वाले गुणों का, भी ध्यान दिया जाने लगा। हिंदी महाकाव्य की नायिकाओं में सभी गुण प्राप्त होते हैं।

सौंदर्य और श्रृंगार
सौंदर्य पर मनुष्य की प्रबल आसक्ति है। केवल चेतन जगत नहीं जड़ जगत भी इसी में लिपटा हुआ है। सरिताओं का उल्लास से सागर की ओर बढ़ना, लता का वृक्ष के संयोग से लहलहाना सबमें एक अज्ञान अकर्षण है। प्रवृती के सौंदर्य के साथ – साथ नारी के सौंदर्य ने भी कवियों के काव्य में व्यंजना पाई। नखशिखांत वर्णन, नायिकाओं के हावभाव का वर्णन एवं प्रेम का सूक्ष्म वर्णन की ओर कवियों ने ध्याान आकर्षित किया है। नारी सौंदर्य की परिकल्पना संस्कृत से चली आ रही है। कालिदास ने श्रृंगार के समस्त अवयवों का वर्णन बड़ी कुशलता के साथ किया है। 'कुमारसंभव' में माता पार्वती का नखशिखाांत वर्णन मिलता है। बाणभट्ट, भवभूति जैसे कुछ कवियों के अतिरिक्त अन्य कवियों ने बाहय सौंदर्य की ओर ही भावना रमी सी प्रतीत होती है।
हिंदी महाकाव्यों की सभी नायिकाएँ अनन्त सौंदर्यशालिनी है। आदि युग के महाकाव्य पृथ्वीराजरासो में संयोगिता एक साधारण स्त्री नहीं वरन् राजकुमारी है। संयोगिता के रुप का कवि ने विस्तारपूर्वक चित्रण किया है। वह चंद्रवनी और मृगनयनी है। उसकी नासिका की शीर के समान तथा दाँत बिजली के समान है –

'चंद्र बदनि मृगनयनि। मोह असित को बंड बनि।
गंग भंग तरलति तरंग। बैनी भुमंग बनि
कीर जासु भ्रगु दिपति। दसन दामिनी दारमवन।
छीन बंक श्रीफल अपीन। चंपक वरणं तन ।' [1]
हिंदी महाकाव्यों की नायिकाएँ सर्वांग सुंदरी है।

पद्मावत में पद्मावती सौंदर्य की साकार प्रतिभा है। उसके रूप का वर्णन जायसी ने कई स्थलों पर किया है। उसके यौवन काल का चित्रण करते हुए जायसी ने लिखा की सभी नायिकाएँ कोमल कांतिवाली है। पद्मावती के शरीर की कांति भी कुंदन के वर्ण सी है –
'यह जो पदुमिनि चितउर आनी। कुंदन क्या दुवादस बानी कुंदन कनक न गंध बासा। वह सुगंध जजु केवल विगासा कुंदन कनक कठोर सो अंगा वह कौवलि रंग पहुप सुरंगा।''[2]
तुलसीदास की सीता का रूप सौंदर्य इतना उत्कृष्ट था कि उनकी उपमा मानवी नारियों से क्या देवी नारियों को भी न दी जा सकती थी । जनक जी वाटिका में सीता के सौदंर्य को देखकर राम उन पर मोहित हो जाते हैं । विधाता ने अपनी सारी निपूणता सीता के सौंदर्य ही समाप्त कर दी।

'सब उपमा कवि रहे जुठारी । केहि परतरौ विदेह कुमारी।''[3]

केशव की सीता का रूप सौंदर्य भी अद्वितीय है। उनके रूप के सम्मुख दमयंती, इंदुमती, और रति भी तुच्छ है। उन्होंने लिखा है –

'को है दमयंती, इंदूमती, रति रातिदिग
होहि न छबीली छन छवि जो सिंगारिये।
केशव लजात जलजात जातवेद ओप
जातरूप वांपुरो विरूप सो निहारिये।
सीता जी के रूप पर देवता कुरूप को है
रूप ही के रूपक तो वारि वारि डारिये ''[4]

'प्रियप्रवास' में राधा का वर्णन एक अनुपम सुंदरी बालिका के रूप में होता है। उषाकाल में अरूणपट पहने हुए उषा सी कमनीय राधा का भी सौंदर्य अपूर्व है। हिंदी महाकाव्यों की नायिकाएँ हावभावों में कुशल होती थी। राधा भी हावभावों मे कुशल थी –

'नाना भाव विभाव हाव कुशला आमोद आपूरिता।
लीला लोल कटाक्ष पात निपुणा भुभंगिमा – पंडिता।
वादित्रादि समोद वाहन परा आभूषण भूषिता।
रांधा थी सुमुखी विशाल नयना आनंद आंदोलिता।''[5]

साकेत की सीता के सौंदर्य का कवि ने सुंदर चित्रांकन किया है। चित्रकुट में रहते हुए उसका रूप दर्शनीय है। सौंदर्य के साथ ही अत्यंत सुकुमार है। उन्हे वन जाने के लिए उन्मत देख कौशल्या चिल्ला उठ़ती है –

"हाथ हटा, ये बल्कल है, मृदुतम तेरे करतल है,
यदि ये छू भी जावेंगे तो छाले पड आवेंगे!"[6]

शील

शील और लज्जा नारी का विशेष आभूषण है। हिंदी महाकाव्यों की नायिकाएँ भी शील से युक्त है। कामायनी की श्रध्दा भी शील और लज्जा से युक्त है। मनु के प्रति अपनी आकांक्षाए वह बड़े ही सांकेतिक रूप में व्यक्त करती है –

''अकेला यह जीवन निरूपाय
आज तक घूम रहा विश्रब्ध!''[7]

श्रध्दा के चरित्र में शील और लज्जा का सुंदर संयोग मिलता है। 'रामचरितमानस' की नायिका में भी शील की प्राप्ति होती है। 'पृथ्वीराज रासो', 'पद्मावत', ' रामचंद्रिका', 'प्रियप्रवास', 'रामचरित चिंतामणि' और साकेत की नायिकाओं के चरित्र में शील का परिचय प्राप्त नहीं होता।

कुल

भारतीय साहित्य शास्त्रियों ने नायिकाओं का उच्च कुल का होना आवश्यक माना है। हिंदी में 'प्रियप्रवास' और ' कामायनी' को छोड़कर सभी महाकाव्यों की नायिकाएँ उच्च कुल की है। वे सभी राजकुमारियॉ है और बाद में उच्च कुल में ही उनका विवाह होता है । पृथ्वीराजरासो की संयोगिता,पद्मावत की पद्मावती भी उच्च कुल की है तथा 'रामचरितमानस', 'रामचंद्रिका', 'रामचरितचिंतामणि', एवं 'साकेत' की नायिकाएँ रघुकुल वी वधुयें है।

आधुनिक युग के महाकाव्य की नायिकाएँ प्रेम पात्र के हित आत्मत्याग, पति–प्रेम का गर्व, मिलन उत्साह,विरह पीड़ा यह सब उसके चरित्र को गौरवान्कित करते हैं। 'प्रियप्रवास' की राधा परकीया भाव से दग्ध है। 'प्रियप्रवास' की राधा श्रीकृष्ण की विवाहिता पत्नी नहीं है परंतु उसके कुल गौरव में कोई कमी नहीं आती।

आधुनिक युग के महाकाव्य की नायिकाओं में मन, वाणी और कर्म यह तीन गुण आवश्यक माने है। 'प्रियप्रवास' और 'कामायनी' की नायिकाओं की परिकल्पना आधुनिक युग की परिवर्तित मान्यता के अनुसार की गई है।

ललित कलाएँ

प्रत्येक देश और काल में महिलाओं ने ललित कलाओं के संरक्षण और विकास में सराहनीय संयोग दिया है। वैदिक काल में यह पंरपरा स्त्रियॉ ही निभाती आई है। 'रामचंद्रिका' 'साकेत' एवं 'कामायनी' की नायिकाएँ भी ललित कलाओं में प्रवीण है। 'रामचंद्रिका से पूर्व के महाकाव्यों में जैसे 'पृथ्वीराज रासो', 'पद्मावत' और 'रामचरितमानस' की नायिकाओं की ललित कलाओं में अभिरूचि नहीं दिखाई देती। रामचंद्रिका की सीता ललीत कला में निपुण है। 'साकेत' की सीता की रूचि ललित कला में प्रतीत होती है। 'कामायनी' की श्रध्दा ललित कला में निपुण है। 'रामचंद्रिका' 'साकेत' एवं 'कामायनी' की नायिकाओं की चित्रकला में रूचि है। शेष महाकाव्यों की नायिकाओं की नहीं।

शिक्षा

नारी स्वभाव से ही कोमल और पराश्रित मानी गई है । उसे सदा से सहनशीलता, उत्सर्ग, कर्तव्यपारायणता,पति प्रेम की शिक्षा दी गई है । हिंदी महाकाव्यों में नारी के लिए किसी प्रकार की शिक्षा संस्था आदि का उल्लेख प्राप्त नहीं होता ।

माता–पिता तथा गुरूजनों के द्वारा ही उसे अक्षरज्ञान कराया जाता था । 'कामायनी' की श्रध्दा अवश्य संगीत शिक्षा प्राप्त करने निकली है । 'पृथ्वीराजरासो' की संयोगिता सभी विदयाओं एवं कलाओं में पारंगत है । 'पद्मावत'की पद्मावती पॉच वर्ष की अवस्था में शास्त्र पढने बिठा दी जाती है।

'रामचरितमानस' में सीता की क्रमिक शिक्षा का कोई रूप उपलब्ध नहीं है ।'प्रियप्रवास' और 'रामचरितचिंतामणि' में नायिका की शिक्षा का कोई रूप उपलब्ध नहीं होता। 'कामायनी' में श्रध्दा को इस प्रकार की कोई शिक्षा नहीं दी गई है। केवल वह संगीत की शिक्षा प्राप्त करने निकली है। उन्हें केवल संकुचित सीमा के भीतर पतिव्रत के आदर्शों का पालन करने की शिक्षा दी गई है । आधुनिक युग के महाकाव्य में भी नायिकाएॅ शिक्षा प्राप्त करते नहीं दिखाई देती।

निष्कर्षतः हिंदी महाकाव्य में नायिका का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कथानक को विकसित करने में पात्रों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हिंदी महाकाव्यों में नायिका के स्वरूप में परिवर्तन होता रहा। आदि युग के महाकाव्य 'पृथ्वीराजरासो' में नायिका का जो स्वरूप मिलता है वह आधुनिक युग के महाकाव्य 'कामायनी'में दृष्टिगोचर नहीं होता। कामायनी के बाद हिंदी महाकाव्यों में एक नवीन परिवर्तन आ गया। तात्पर्य हिंदी महाकाव्यों में नायिका की परिकल्पना विविध रूपों में दृष्टिगोचर होती है जैसे पारिवारिक रूपों में व्यक्तिगत रूपों में, सामाजिक रूपों में। हिंदी महाकाव्य में नायिका हर जगह कर्तव्य परायणता के दर्शन देती दिखाई देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. चंदबरदाईः पृथ्वीराज रासो' काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस सन् 1907 ई.समय 47,पृ.1279
2. जायसी ग्रंथावली, संपादक. रामचंद्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस तृतीय संस्करण, सं. 2003, पृ.209
3. तुलसीदासः 'रामचरितमानस'–बालकंड, पृ.134
4. केशवदासः 'रामचंद्रिका पूर्वार्ध, रामनारायण लाल, प्रयाग अष्टम संस्करण, सं.2013, प्रकाश 6,पृ.105
5. अयोध्या सिंह उपाध्याय, प्रियप्रवास, पृ.44
6. रामचरित उपाध्याय 'रामचरितचिंतामणि, ग्रंथमाला कार्यालय, बांकीपुर, प्र.संस्करण, 1920 ई.चतुर्थ सर्ग, पृ.356
7. जयशंकर प्रसादः कामायनी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, अष्टम संस्करण, सं. 2010 श्रध्दा सर्ग,पृ.52